आधुनिक हिंदी साहित्य और समाज

पद्मश्री चौगुले

विभागध्यक्ष, हिन्दी के.एल.ई. बसवप्रभु कोरे कला विज्ञान तथा वाणिज्य महाविद्यालय, चिकोडी.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263849

ABSTRACT:

"साहित्य से समाज, समाज से साहित्य" ये दोनों एक-दूसरे से गहरे रूप से जुड़े हुए हैं। साहित्य न केवल समाज की परिस्थितियों को दर्शाता है, बल्कि उसमें परिवर्तन लाने की क्षमता भी रहती है।

"मानव मन की छवि है साहित्य, मानव जीवन की कवि, कला, भाव ही साहित्य, मानव की आशा-आकांक्षा साहित्य, मानव का नित्य रूप साहित्य, मानव को जीने की चाह, जीवन की राह दिखाता है साहित्य।" आधुनिक हिंदी साहित्य ने समाज की चेतना को जगाने का कार्य करते हुए सोच को बदलने और नई विचारधाराओं के साथ विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर प्रश्न उठाने का काम भी किया है।

KEYWORDS:

राष्ट्रवाद, आत्मानुभूति, देशभक्ति, चेतना, सांप्रदायिकता, साहित्य, समाज.

प्रस्तावना:

समय के साथ समाज के बदलते स्वरूप को उकेरता है साहित्य। सामाजिक चेतना, संवेदना और विचारधाराओं को नई दिशा प्रदान करता है। राष्ट्रवादी भावना, स्त्री विमर्श, दलित चेतना, या वैश्वीकरण की चुनौतियाँ आदि आधुनिक हिन्दी साहित्य में हर पहलू को छूते हुए हर किसी को सोचने पर मजबूर कर देनेवाला साहित्य यह आधुनिक हिन्दी साहित्य है। अद्‌भुत रूप से कहें तो सुंदर सलीके से आधुनिक हिन्दी साहित्य ने समाज को सींचा है।

सारांश

आधुनिक युग की शुरुआती दौर भारतेंदु युग से है।

भारतेन्दु युग: नवजागरण और सामाजिक सुधारों की ओर बढ़ता कदम माना जाता है।

द्विवेदी युग: राष्ट्रवाद, सामाजिक चेतना और गद्य के सशक्त रूप का दर्शन कराता है।

छायावाद युग: आत्मानुभूति, भावुकता, और सौंदर्य-बोध हमें कराता है।

प्रगतिवाद: समाजवादी सोच के साथ वर्ग-संघर्ष, मजदूर-किसान के जीवन की अभिव्यक्ति कराते हुए प्रगतिवाद का चित्रण देखने को मिलता है।

नई कविता, प्रयोगवाद, और समकालीन साहित्य: शहरीकरण, अस्तित्ववादी संकट, राजनीतिक अस्थिरता, स्त्री विमर्श, दलित साहित्य आदि का विस्तार रूप देखने को मिलता है।

आधुनिक हिंदी साहित्य ने भारतीय समाज में कई प्रकार के बदलावों को प्रेरित किया:

समाज में स्थित कुरीतियों के खिलाफ आवाज़ उठाने का कार्य किया: दहेज प्रथा, जातिवाद, बाल विवाह, विधवा जीवन आदि पर कई साहित्यकारों ने कलम चलाई है। जैसे कि 'सद्‌गति' – मुंशी प्रेमचंद जी की कहानी है। यह कहानी सीधे तौर पर दहेज पर नहीं है, लेकिन इसमें अंधविश्वास, सामाजिक अन्याय और जात-पात, ऊँच-नीच, पाखंड की

आलोचना की गई है, जो दहेज जैसी प्रथाओं की जड़ में हैं।

इस कहानी में मुख्य पात्र में दिखनेवाला दुखी चमार अपनी बेटी के खातिर पंडित जी के यहाँ साइत निकलवाने हेतु गया था तो पंडितजी कहते हैं, "उठाले कुल्हाड़ी और लकड़ी फाड़ डाल। तुझसे जरा-सी लकड़ी नहीं फटती। फिर साइत भी वैसे ही निकलेगी, मुझे दोष मत देना।" तो दहेज रूप में पंडित जी ने उसके हाथों कई तरह के काम करवा लिए, बड़ी हीनता से उसके साथ पेश आते हैं और अंत में दुखी अपना प्राण गँवाता है। मजबूरी, सामाजिक बंधन इंसान की जान पर आन पड़ती है।

राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता संग्राम: लोगों में देशभक्ति की भावना को जागृत करने का कार्य साहित्य ने किया। मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, रामधारी सिंह दिनकर जैसे कवियों ने राष्ट्रीय चेतना का भाव साहित्य से जागृत किया।

वंचित वर्ग की ध्वनि: दलित साहित्य ने वर्ण-व्यवस्था की आलोचना की और दलित समाज के संघर्षों को सामने लाने का सुचारु प्रयत्न किया। ओमप्रकाश वाल्मीकि, शरणकुमार लिंबाले आदि ने साहित्य से समाज को सींचा। ओमप्रकाश वाल्मीकि जी कृत 'सलाम' रचना कूप्रथा से सम्बंधित तथा वंचित वर्ग की व्यथा, संघर्ष को दिखाने का प्रयास करता है। उसमें खुद एक माँ अपने बच्चे को समझा रही है कि "बेटे इनके संस्कार गलत हैं। ये छोटे लोग हैं। इनके साथ बैठने से बुरे विचार मन में पैदा होते हैं।"

स्त्री विमर्श: आधुनिक साहित्य में महिलाओं की स्थिति, अधिकार, स्वतंत्रता और संघर्ष को उजागर करता है। कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान आदि की रचनाएँ बहु मार्मिक हैं। कृष्णा सोबती जी की 'डार से बिछुड़ी' यह उपन्यास पाशो नामक कथा-नायिका के जीवन-संघर्ष को बयाँ करती है। खुद की नानी कहती है कि "आग लगे तेरी जवानी को!" यह सुनते ही घर से कहीं भाग जाने का मन करता है पाशो को। पाशो अनमेल विवाह तथा विधवा जीवन को जीते-जीते कैसे अंत में अपने बेटे के मदद से पुनः परिवार से जा मिलती है, उसका चित्रण हम इसमें देख सकेंगे।

दहेज प्रथा: दहेज प्रथा भारतीय समाज की एक गंभीर सामाजिक

कुरीति रही है, जिसे आधुनिक हिंदी साहित्य में कई लेखकों ने गहराई से उकेरा है। आधुनिक हिंदी की अनेक कहानियाँ और उपन्यास दहेज प्रथा के कारण होनेवाली नारी की पीड़ा, शोषण, आत्महत्या, दांपत्य विफलता और सामाजिक अन्याय को उजागर करते हैं। दहेज प्रथा पर आधारित हिंदी की कुछ प्रमुख कहानियाँ जैसे कि... मुंशी प्रेमचंद जी की "निर्मला" – उपन्यास, यह उपन्यास दहेज प्रथा और बेमेल विवाह के कारण स्त्री जीवन में आई त्रासदी को दर्शाता है। भीष्म साहनी जी की रचना "दहेज" – इस कहानी में दहेज के कारण लड़की की शादी टूट जाती है, और उसका आत्म-सम्मान कैसे कुचला जाता है – यह बड़ी सजीवता से दिखाया गया है।

जातिवाद, वर्ग संघर्ष: जातिवाद भारतीय समाज की सबसे पुरानी और गहरी सामाजिक समस्याओं में से एक है। आधुनिक हिंदी साहित्य— विशेषकर उपन्यास विधा ने जातिगत भेदभाव, वंचित वर्गों के संघर्ष, और सामाजिक असमानता को सशक्त रूप से चित्रित किया है। भारतीय समाज में मौजूद वर्ण-व्यवस्था और जातीय सोच को प्रतीकात्मक तरीके से प्रस्तुत करने का कार्य धर्मवीर भारती जी की रचना 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' इस रचना ने बखूबी रूप से किया है। धर्म और जाति के नाम पर समाज में हो रही राजनीति और आम लोगों की स्थिति को प्रकट करने का कार्य "छपरा एक्सप्रेस" ने किया है जो राही मासूम रज़ा जी की रचना है। यशपाल जी का महत्त्वपूर्ण उपन्यास "झूठा सच" भारत-पाक विभाजन की पृष्ठभूमि, जातीय, धार्मिक और सामाजिक भेदभाव के साथ-साथ राजनीतिक स्वार्थ को दर्शाता है। "पक्की सड़क" – रांगेय राघव जी की रचना है, यह ग्रामीण भारत में जातीय भेदभाव और आर्थिक शोषण जताता है।

बाल विवाह: बाल विवाह भारतीय समाज की एक पुरानी और पीड़ादायक सामाजिक कुरीति रही है, जो विशेष रूप से स्त्रियों के जीवन को गहरे स्तर पर प्रभावित करती है। आधुनिक हिंदी साहित्य ने इस विषय को गहराई से छुआ है — खासकर उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में समाज सुधार आंदोलनों का प्रभाव साहित्य पर स्पष्ट दिखा है। निर्मला – मुंशी प्रेमचंद का ही प्रख्यात उपन्यास है। यह उपन्यास बाल विवाह के सामाजिक और मानसिक दुष्परिणामों को मार्मिक रूप से प्रस्तुत करता है। तो 'बड़े घर की बेटी' बाल विवाह, पारिवारिक सामंजस्य और स्त्री

की समझदारी के साथ-साथ इस कहानी में विवाह के बाद एक लड़की अपने पति और उसके परिवार को एकजुट रखने में सफल होती है, भले ही वह बालिका हो फिर भी सफल होती है, वह चित्रण देखने को मिलता है और यह कहानी बाल विवाह के खिलाफ सीधे नहीं है, लेकिन यह समझाता है कि किस तरह छोटी उम्र की लड़कियों से वयस्क ज़िम्मेदारियों की अपेक्षा की जाती है।

विधवा जीवन: विधवा एक ऐसा सामाजिक विषय है जिसे आधुनिक हिंदी साहित्य ने बड़ी गंभीरता और संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है। "भारतीय समाज में विवाह को जन्म-जन्म का आध्यात्मिक बंधन माना जाता है।"

परंपरागत भारतीय समाज में विधवा होना केवल पति की मृत्यु का ही नहीं, बल्कि सामाजिक बहिष्कार, अधिकारों की हानि, मानसिक-शारीरिक उत्पीड़न, और जीवन की स्वतंत्रता के गला घोंटने का प्रतीक बना था। धर्मवीर भारती जी की रचना 'गुनाहों का देवता' उपन्यास में विधवा माँ की छाया और उसकी पारंपरिक सोच बेटी सुधा के निर्णयों को प्रभावित करती है। यद्यपि यह उपन्यास विधवा पर केंद्रित नहीं है, लेकिन विधवा जीवन की सांस्कृतिक छाया इसमें झलकती है। 'बिना दीवारों का घर' – मन्नू भंडारी की यह कहानी एक स्त्री के संघर्ष की कहानी है जो एकल माँ है। विधवा नहीं है, परंतु इसमें एकाकी स्त्री के समाज में संघर्ष, अकेलेपन और स्त्री अस्मिता के प्रश्न उठाए गए हैं। अंततः सभी बिंदुओं को देखा जाए तो आधुनिक हिन्दी साहित्य ने भरपूर मात्रा में समाज को बदलाव की मोड़ में लाते हुए, साहित्य को कई साहित्यकारों ने अपना कलम चलाते हुए एक नई दिशा प्रदान किया हुआ दिखाई देता है। "साहित्य एक-दूसरे के दुःख में दुःखी होना और एक-दूसरे के सुख में सुखी होना सिखाता है।"

निष्कर्ष:

आधुनिक हिंदी साहित्य में कई विषय-संबंधित प्राधन्यता को हम देख सकते हैं। जातिवाद आलोचना, वंचित वर्गों की चेतना, विधवा स्त्रियों की स्थिति-गति, बाल विवाह, कूरीति, परंपरा, राष्ट्रीय भावना आदि पर गंभीर चिंतन हुआ है। कुल मिलाकर यह आधुनिक हिन्दी साहित्य हमें यह सोचने पर विवश करता है कि समाज के लिए क्या सही

है और क्या गलत है।

सहायक ग्रंथ:

1. समकालीन कहानी तथा कविता - डॉ. राजेंद्र पोवार - २०२३ - लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
2. डार से बिछुड़ी - कृष्णा सोबती - २०२१ - राजकमल प्रकाशन (पेपरबैक्स), दरियागंज, नई दिल्ली
3. कथा दर्पण - डॉ. राजेंद्र पोवार - लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
4. शशिप्रभा शास्त्री के कथा साहित्य में स्त्री पुरुष संबंध - डॉ. विजयमाला गायकवाड़ - २०२२ - शुभम पब्लिकेशन, कानपुर

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.